सत्यं शिवं सुन्दरम्

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सत्यं शिवं सुन्दरम् ज्ञान की त्रिवेणी है। भारतीय संस्कृति में गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम को त्रिवेणी कहा जाता है। त्रिवेणी में स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती हैं ऐसा भारतीय जनमानस में प्रचलित है। व्यवहार जगत और अध्यात्म जगत दोनों इससे पवित्र हो जाते हैं। सत्यं का अर्थ है–सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य है। सत्य वस्तु का सार तत्व है। मिथ्या का कोई आधार नहीं होता। एक गलती को छुपाने के लिए अनेक गलती करनी पड़ती है और अन्त में मनुष्य को दुःख मिलता है। सत्य से वातावरण निर्भय बनता है। इसीलिए कहा गया है कि **सत्यमेव जयते** अर्थात् सत्य की ही विजय होती है।

भारतीय संस्कृति को सत्यं शिवं सुन्दरम् के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। जहां पर सत्य रहता है वहां पर शिव रहेगा और जहां शिव रहेगा सुन्दरता वहां अपने आप रहेगी। सत्य के सिवा इस संसार में जितनी भी वस्तुएं है सब औपाधिक है। यह संपूर्ण सृष्टि ईश्वर के द्वार रचित है। इसमे सत्य समाया हुआ है। अपने–अपने कर्मों के अनुसार सभी प्राणी इस संसार में जन्म लेते है और कर्मों का भोगकर यथास्थान चले जाते है। इसलिए मानव को सत्कर्म ही करना चाहिए। सत्कर्म करने से यह लोक तो सुधरता ही है, परलोक भी सुधर जाता है।

महापुरुषों का जीवन सत्य से अनुप्राणित है। महात्मा गांधी ने अपने जीवन में सत्य अहिंसा का पालन किया। सत्य और अहिंसा के द्वारा उन्होंने देश को आजाद करा दिया। सत्यं शिवं और सुन्दरम् जब व्यवस्था में आ जाता है तो राम राज्य का अवतरण होता है। राम राज्य का मतलब है जहां पर किसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार का कष्ट न रहे। सभी समता मूलक जीवन जिये जीवन में सत्यं शिवं और सुन्दरम् लाने के लिए पुरुषार्थ चतुष्टय की कल्पना की गई है। धर्म अर्थ काम और मोक्ष जीवन के चार पुरुषार्थ है। धर्म के द्वारा सत्कर्मों का अर्जन किया जाता है। अर्थ के द्वारा जीवन सुचारू रूप से चलाया जाता है। काम के द्वारा मन को संतुष्ट कर इच्छाओं की पूर्ति की जाती है। मोक्ष जीवन का अंतिम पुरुषार्थ है।

प्रत्येक प्राणी चाहे वे सदाचारी हो या दुराचारी उसकी इच्छा यही रहती है कि हमें मोक्ष प्राप्त हो। किन्तु जो सत्कर्म करता है, जो सत्यं शिवं सुन्दरम् का पालन करता है वही मोक्ष को प्राप्त करता है। सत्य जीवन का सार है। यह जीवन के लिए अमृत तुल्य है। शिव का अर्थ है कल्याण। देवताओं में भगवान् शिव कल्याण करने के देवता माने जाते है। किन्तु उन्हें संहार का भी देवता माना जाता है। जो सत्य का आचरण करता है उसके लिए तो वे मंगल प्रदाता है। किन्तु जो असत् का आचरण करता है उसके लिए वे संहार करता भी है। सत्यं शिवं सुन्दरम् की त्रिवेणी में जो स्नान करता है वही मोक्ष को प्राप्त करता है।

अहिंसा, संयम और तप के द्वारा जीवन को नैतिक बनाना चाहिए। किसी भी जीव की हिंसा नहीं करनी चाहिए। सभी से प्रेम का बर्ताव करना चाहिए। संयम जीवन को नियन्त्रित करता है। कहा गया है संयमः खलु जीवन जीवन में संयम का बहुत बड़ा महत्व है। तप बाह्य और आन्तरिक जीवन को नियंत्रित करता है। जिसके जीवन में अहिंसा, संयम और तप रहता है वह सत्यं, शिवं और सुन्दरम् को प्राप्त कर लेता है। सत्य के कई अर्थ है एक अर्थ में जो अविनाशी, चिरंतन और शाश्वत है वही सत्य है। इसके अतिरिक्त इन्द्रियों द्वारा देखना, सुनना, जानना एवं अनुभव करना सत्य है।

चराचर प्राणी जगत के एक अंश के रूप में स्वयं के होने का एहसास ही सत्य है। अन्य वस्तुएं अशाश्वत हैं केवल ईश्वर ही सत्य और स्नातन है। ईश्वर सत्य है और जगत् मिथ्या है। मिथ्या इसको इसलिए कहा जाता है कि यह परिवर्तनशील और क्षणभंगुर है। ईश्वर रचित जितने भी पदार्थ है उनका उपयोग समभाव से करना चाहिए। सृष्टि की कल्याणकारी शक्ति में शिव तत्व का वास होता है।

सुन्दरता कई प्रकार की होती है। कहा जाता है कि सुन्दरता देखने वालों की आंखों में होती है न कि वस्तु में। सुन्दरता का तात्पर्य किसी दैहिक या प्राकृतिक सौन्दर्य से नहीं है। सुन्दरता वास्तव में पवित्र मन, कल्याणकारी आचार और सुखमय व्यवहार है। इस सुन्दरता का चिरंतन स्रोत शिव ही है। स्वयं शिव का सौन्दर्य दिव्य ज्योति स्वरूप है। इस भौतिक आंखों से जिसे देखा नहीं जा सकता केवल उस तत्व का अनुभव किया जाता है, उनके गुणों तथा शक्तियों का अनुभव किया जाता है। ध्यान की अवस्था में मन को एकाग्र कर ललाट के मध्य दोनों

भृकुटियों के मध्य ज्योति रूप में इसका अनुभव किया जा सकता है। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने जब अपने विश्वरूप का दर्शन कराया तो वही सत्यं शिवं सुन्दरम् का रूप था।

परमात्मा को देखने के लिए स्थूल नेत्र पर्याप्त नहीं है। उनको देखने के लिए आत्मज्ञान रूपी सूक्ष्म नेत्र की जरूरत होती है। अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने दिव्य चक्षु के द्वारा आत्मदर्शन कराया था। मानव समाज तथा सम्पूर्ण प्राणी जगत को कल्याण की भावना से भावित करने वाला तत्व सत्यं शिवं सुन्दरम् है। सत्यं शिवं सुन्दरम् मानव जीवन का सार है। यही मोक्ष तत्व है और जीवन का परम लक्ष्य है।